

नागार्जुन के काव्य में चित्रित वर्ग संघर्ष

डॉ. नितीन विठ्ठल पाटील

विठ्ठलराव पाटील महाविद्यालय, कळे

तहसील-पन्हाळा, जिला-कोल्हापूर

पिन-416205

Email- nitinpatil9282@gmail.com

सारांश —

नागार्जुन एक जनकवि थे, जिन्होंने समाज के वंचित, शोषित और पीड़ित वर्गों की पीड़ा को स्वर दिया। उन्होंने पूंजीवाद, सामंतवाद, साम्राज्यवाद, और धार्मिक पाखंड का खुलकर विरोध किया तथा मार्क्सवादी विचारधारा से प्रेरित होकर समाज में बदलाव की चेतना को स्वर प्रदान किया। उनकी कविताओं में मजदूर, किसान, दलित, नारी और सामान्य जन की संघर्षपूर्ण स्थिति का यथार्थ चित्रण मिलता है। उन्होंने आज़ादी के बाद टूटते जन-सपनों, पूंजीपतियों के शोषण, किसानों की भूख, मजदूरों की बेबसी और मास्टर जैसे मध्यमवर्गीय लोगों की दयनीय हालत को बेहद संवेदनशीलता और व्यंग्यात्मकता के साथ प्रस्तुत किया। उनकी कविताएँ जैसे 'जन्मदिन नये शिशुराष्ट्र का', 'रामराज्य', 'अकाल और उसके बाद', 'मास्टर' आदि में नागार्जुन ने वर्ग संघर्ष को गहराई से दर्शाया। उनका साहित्य केवल साहित्यिक सौंदर्य नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन का औजार बन गया। नागार्जुन का काव्य जन-सरोकारों, यथार्थ और सामाजिक चेतना से जुड़ा हुआ साहित्य है, जो आज भी संघर्षशील जनता को प्रेरणा और संघर्ष की दिशा प्रदान करता है। उनका साहित्य हिंदी में वर्ग संघर्ष के प्रभावी चित्रण का एक सशक्त उदाहरण है।

भूमिका —

हिंदी साहित्य के प्रगतिवादी आंदोलन में नागार्जुन एक

महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। वे जनवादी साहित्यकार के साथ, एक सामाजिक कार्यकर्ता, चिंतक और जनसरोकारों के पैरोकार भी थे। नागार्जुन का काव्य वर्ग संघर्ष की भावना से ओतप्रोत है। उन्होंने समाज के वंचित, शोषित और उपेक्षित वर्गों की व्यथा को स्वर दिया तथा पूंजीवादी व्यवस्था और शोषणकारी तंत्र पर तीखा प्रहार किया। उनके साहित्य में वर्ग चेतना और परिवर्तन की तीव्र आकांक्षा स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। नागार्जुन की कविता आम जनता का बुलंद आवाज़ है। वे किसानों, मजदूरों, शोषितों और पीड़ितों के पक्ष में खुलकर लिखते हैं। उनकी कविताओं में जन-संघर्ष, असंतोष और क्रांति की भावना दिखाई देती है। वे शोषकों का अपनी लेखनी के माध्यम से तीव्र विरोध करते हुए दिखाई देते हैं। वे अलंकरण की प्रवृत्ति के पीछे न भागते हुए समाज की यथार्थता को वर्णित करने की कोशिश करते हैं। वर्ग संघर्ष वह सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न आर्थिक और सामाजिक

वर्गों के मध्य विरोध, टकराव और संघर्ष उत्पन्न होता है। कार्ल मार्क्स ने इसे पूंजीवादी समाज की आधारभूत संरचना बताया। नागार्जुन ने इस संघर्ष को भारतीय समाज के यथार्थ के साथ जोड़ते हुए काव्य का विषय बनाया।

मूल शब्द: व्यंग्य, पूंजीवाद, मार्क्सवाद, मूल्य, सामंतवाद, संवेदना, विडंबना, साम्यवाद

नागार्जुन के काव्य में चित्रित वर्ग संघर्ष:

वर्ग संघर्ष एक महत्वपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अवधारणा है, जिसका संबंध समाज में विभिन्न आर्थिक वर्गों के बीच होनेवाले टकराव से होता है। यह विचार खासतौर पर मार्क्सवादी विचारधारा से जुड़ा हुआ है। मार्क्सवाद वर्गविरहित समाज व्यवस्था की रचना चाहता है। आज आधुनिकता की आड़ में पूंजीवादी व्यवस्था अधिक बलशाली बनती जा रही है। पूंजीवादी व्यवस्था में एकाधिकारशाही और शोषण करने की प्रवृत्तियाँ बढ़ने लगती हैं। कार्ल मार्क्स के अनुसार इस व्यवस्था में मजदूरों के श्रम को कम मूल्यों में खरीदकर अतिरिक्त मूल्यों में बेचा जाता है। नागार्जुन जी के काव्य में ऐसी व्यवस्था पर हमें तीखे व्यंग्य देखने को मिलते हैं। डॉ. शांति विश्वनाथ जी के अनुसार

“नागार्जुन के समग्र काव्य साहित्य पार दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि उनका साहित्य जीवन और जगत की वास्तविकता का एक विशिष्ट प्रतिफलन है, वास्तविक संसार का प्रतिबिम्ब भी है और आलोचना भी। यथार्थ का दर्पण भी है और प्रगति की मशाल भी सामाजिक प्रभाव और परिवर्तन का ऐसा हथियार है, जिसकी शक्ति और प्रहार संजीवनी का कार्य करती है। भाव अनुभूति, संवेदना, व्यंग्यात्मकता के विविध रूपों का मानवीय स्वर नागार्जुन की कविता में कलात्मकता के मणिकांचन संयोग के साथ भास्वरित है”¹। नागार्जुन का जन्म एक साधारण ब्राह्मण परिवार में हुआ था, परंतु उनका खुद का अनुभव और अध्ययन उन्हें जनता के संघर्षों के निकट ले गया। उनके भीतर किसान, मजदूर, दलित, नारी और आम जनता की पीड़ा को अभिव्यक्त करने की गहरी इच्छा थी। वे केवल शोषण का विरोध नहीं करते, बल्कि शोषकों की मुखर आलोचना भी करते हैं।

आजादी के बाद देश की आम जनता ने जो सपने देखे थे वो धीरे-धीरे टूटने लगे। लोगों में मोहभंग की स्थिति निर्माण होने लगी। गरीब की स्थिति बद से बदतर होने लगी। अमीर वर्ग पूंजी के बलबूते गरीबों, किसानों और मजदूरों पर अन्याय करने लगा। उन्हें विविध माध्यमों से लूटने लगा। इन परिस्थितियों में नागार्जुन जैसे रचनाकार तटस्थ नहीं रह सकते थे। उन्होंने अपना झुझारूपन दिखाकर इन बातों का कविताओं के माध्यम से खुलकर विरोध किया। नागार्जुन जी केवल कविताएँ ही नहीं लिखी बल्कि आंदोलनों में भी सक्रिय रहे जिसके कारण उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। उनका झुकाव मार्क्सवादी विचारधारा की ओर रहा। नागार्जुन की कविताओं में साम्राज्यवाद, सामंतवाद और पूंजीवाद का तीव्र विरोध देखने को मिलता है। आजादी के बाद मजदूर-किसान आदि के हित को ध्यान में रखकर जो बातें की गईं थी वह सब धाराशाही होने लगी। आजादी की पहली वर्षगांठ पर उन्होंने ‘जन्मदिन नये शिशुराष्ट्र का’ कविता में उन्होंने लिखा –

“आज ही तुम मिल गये थे दुश्मनों से, गुनहगारों से,

छोड़कर संघर्ष का पथ

भूलकर अंतिम विजय की घोषणाएँ

भोंककर लंबा छुरा तुम सर्वहारा जनगणों की पीठ में”²

इस कविता में उन्होंने तत्कालीन तत्कालीन शासन व्यवस्था की अन्यायकारी व्यवस्था का तीव्र शब्दों में निषेध किया। साथ ही जनता में अलख जगाने की कोशिश की है।

नागार्जुन जी की कविताओं में शोषितों और उपेक्षितों के प्रति सहानुभूति देखने को मिलती है। उनकी कविताएँ भारत के सामान्य जन की मुँह बोलती तस्वीरें हैं। जिसमें ग्रामीण समाज की विषमताओं, विवशताओं और विकृतियों का अत्यंत बारीकी से चित्रण किया है। नागार्जुन जी ने उपेक्षित और पीड़ित वर्ग का केवल चित्रण ही नहीं किया साथ ही उनके प्रति सहानुभूति भी प्रकट की। खुद संघर्षों की अग्नि में निरंतर तपने और हर समय विषमताओं का सामना करने के कारण उनका मन पर्याप्त मानवीय और सहानुभूतिशील हो गया था। ‘सच न बोलना’ और ‘रामराज्य’ जैसी कविताओं में पूँजीपतियों के क्रूर अत्याचार का वर्णन करते हुए वे दिखाई देते हैं। वे लिखते हैं –

“खादी ने मलमल से अपनी साँठ-गाँठ कर डाली है।

बिड़ला टाटा और डालमियाँ की तिसों दिन दिवाले हैं।”³

इस तरह की कविताओं में कवि नागार्जुन जी पूँजीपतियों के खिलाफ आक्रोश व्यक्त करते हुए नज़र आते हैं। युगीन परिस्थितियों से पीड़ित कवि की आत्मा न केवल चीत्कार करती है बल्कि आम जनता की आँखें खोलने का प्रयास भी करती है।

आजाद भारत में किसान और मजदूरों की हालत अत्यंत दयनीय बनी हुई थी। भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ की ज्यादातर जनता खेती और मज़दूरी से जुड़ी हुई है। स्वतंत्रता के बाद देश ने कई क्षेत्रों में प्रगति की, लेकिन किसानों और मज़दूरों की स्थिति आज भी चिंता का विषय बनी हुई है। इन वर्गों को देश की रीढ़ माना जाता है, फिर भी यह वर्ग अक्सर उपेक्षित और संघर्षरत रहा है। लेकिन आजादी के बाद सबको खाना देनेवाला किसान ही भूखा मर रहा है। वह आत्महत्या के लिए प्रवृत्त हो रहा है या किया जा रहा है। भारतीय किसान के पास न तो बोने के लिए बीज है, न ठीक ढंग से खेती करने के लिए सामान। वो हर साल कर्ज पर कर्ज लेता रहता है और उसमें ही डूबता चला जाता है। इस कारण किसान ठीक ढंग से अपने परिवार का पेट भी नहीं भर पा रहा है। इस संबंध में कवि लिखते हैं-

“पक्षी भी भर पेट चुग चर लेते हैं,

वन्य जंतु भी उदर किसी विधि भर लेते हैं,

प्राणों का आधार कुछ न कुछ कर लेते हैं।

कर्ज किसी से कभी न खर पूर कर लेते हैं।

और एक हम हैं कि नित बता ऋण का भार है,

फर भी हमको पेट भर मिलता नहीं आहार है।”⁴

किसान तत्कालीन समाज और आज का भी एक दीन -हीन तथा उपेक्षित समाज है। अशिक्षा उसकी पीड़ाओं को और बढ़ा देती है। उस वर्ग का विकास कैसे संभव है जो हर क्षण पेट की चिंता से मरता रहता है।

हमारे देश में किसानों की तरह मजदूरों की हालात भी कुछ ठीक नहीं है। मजदूर भारत की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाते हैं। चाहे वह खेतों में काम करने वाले खेतिहर मजदूर हों, या कारखानों, निर्माण स्थलों, या घरेलू कामों में लगे हुए शहरी मजदूर — इनकी मेहनत से देश का विकास संभव होता है। अनेक कारखानों में मजदूरों की हालत अत्यंत दयनीय है। अधिकांश मजदूर अनौपचारिक क्षेत्र में काम करते हैं, जहाँ उन्हें सामाजिक सुरक्षा, नियमित वेतन और अन्य लाभ नहीं मिलते। तत्कालीन समय में पूँजीपति वर्ग के लोग उनकी मजबूरी गलत फायदा उठाते थे। कम वेतन देकर उनसे अधिक से अधिक काम करवा लेते थे। इन मजदूरों को मजबूरियों के जंजीरों में जकड़ कर रखते थे। एक मजदूर इतना भी कमा नहीं पाता था कि वो अपने परिवार का ठीक ढंग से ख्याल रख सके। अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे सके। नागार्जुन भेदभाव और शोषण को मिटाकर सद्भाव निर्माण करना चाहते हैं। कवि को ऐसा लगता है कि एक दिन ऐसा आएगा जब इस देश पर किसान और मजदूरों का राज होगा। यही आशावादी प्रकृति से वे लिखते हैं—

“बढ़े सहयोग भेद मिट जाए, मिटे शोषण का नाम-निशान
ढहे अन्यायों की दिवार, सुखी होवें मजदूर-किसान
हो न फूट सहयोग-भावना सब में घर कर जाए
जन-जन में सहयोग बढ़े विकसित हो खूब समाज
युग पलटा है अब किसान मजदूर करेंगे राज।”⁵

जब भी किसी पेशे के मनुष्य सताए जाते हैं तब उनमें एकता होनी जरूरी है। तभी वे इन अन्यायकारी पूँजीपतियों से लड़ सकते हैं।

शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। लेकिन तत्कालीन समाज व्यवस्था में उसे अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है। ‘मास्टर’ नामक कविता में कवि एक ग्रामीण स्कूल के मास्टर की दयनीय स्थिति का चित्रण करता है। मास्टर एक निम्न मध्यवर्गीय मास्टर है जो शिक्षा प्रणाली, प्रशासनिक उपेक्षा और आर्थिक तंगी के बीच पिस रहा है। उसकी तनख्वाह बहुत कम है और समय पर नहीं मिलती, फिर भी वह ईमानदारी से पढ़ाता है। मास्टर स्कूल में पढ़ाने के साथ-साथ कई अन्य काम करने

को भी मजबूर है, जैसे — चुनाव ड्यूटी, जनगणना, राशन कार्ड भरना आदि। समाज में उसकी कोई खास इज्जत नहीं है, लेकिन फिर भी वह सब कुछ सहते हुए अपने कर्तव्यों प्रति हर समय सचेत रहता है। लेकिन स्वयं अपना ही कल्याण करने में असमर्थ है। कवि इस कविता के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था की कमजोरियों, अध्यापकों की उपेक्षा, निंदा और उनकी सामाजिक, आर्थिक असुरक्षा पर व्यंग्य करते हैं। मास्टर एक ऐसा प्रतीक बन जाता है जो पूरी व्यवस्था की विसंगतियों को सामने लाता है। ‘मास्टर’ शीर्षक कविता में नागार्जुन जी ने मास्टर के मानसिक तनाव का चित्रण करते हुए लिखा है—

“फटी भीत है छत चूती है
आले पर विस्तुइया नाचे
लगा-लगा बेबस बच्चों
पर मिनट मिनट पर पाँच तमाचे
इसी तरह से दुखरन मास्टर
गढ़ता है आदम के साँचे।”⁶

जो अध्यापक समाज को एक सही दिशा देने का काम करता है, यदि वही उपेक्षित रह जाए तो उससे समाज कल्याण की भावना रखना मूर्खता है। पहले हमें उसकी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाना होगा। उसको संघर्षों और तनावों से मुक्त कराना होगा।

नागार्जुन जी एक जनकवि के रूप में जाने जाते हैं। उनके काव्य में प्रगति के स्वर प्रमुख हैं। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से मार्क्सवादी सिद्धांतों का प्रचार भी किया। उनकी कविताओं और उनके वास्तविक जीवन में गहरा सामंजस्य है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से मध्यमवर्गीय जीवन को यथार्थ रूप में पेश किया। उन्होंने जगत की वास्तविकता को सच्चे रूप में सामने लाया। अपने साहित्य के माध्यम से अनेक समस्याओं को विविध रूपों में चित्रित किया। उनकी ‘अकाल और उसके बाद’ यह कविता इसी कारण ही काफ़ी चर्चा में रही। इस कविता में नागार्जुन ने बिहार में पड़े भयंकर अकाल और उससे उत्पन्न पीड़ा का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है। वे अकाल के दौरान जनता की भूख, बेबसी, और मृत्यु को दर्शाते हैं, और फिर उसके बाद की व्यवस्था पर व्यंग्य करते हैं। कवि बताते हैं कि किस तरह लोग अन्न के एक दाने को तरसते हैं, बच्चे भूख से तड़पते हैं, और इंसान की गरिमा तक खो जाती है। लेकिन अकाल के बाद नेता लोग केवल राहत की घोषणाएं करते हैं, लेकिन वास्तव में कुछ भी नहीं होता। कई राजनेता तो इसको मुद्दा बनाकर अपनी राजनीतिक रोटि सेंकने की कोशिश करते हैं। इसमें हमारे नेताओं और अधिकारियों का असंवेदनशील चेहरा सामने आता है।

“कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।”⁷

नागार्जुन ने यह दिखाया है कि किस तरह शासक वर्ग आपदाओं का इस्तेमाल केवल अपनी राजनीति चमकाने के लिए करता है। कविता में व्यवस्था की असफलता, गरीबों के प्रति उपेक्षा, और सत्ता की संवेदनहीनता पर करारा प्रहार किया गया है।

आधुनिक हिंदी साहित्य में आक्रोश और विद्रोह के स्वर को रूपायित करनेवाले रचनाकारों में नागार्जुन जी का नाम प्रथम स्थान पर आता है। उनकी रचनाओं में व्यक्त आक्रोश जनता का आवाज बन गया। इनकी कविताओं से शासन व्यवस्था भी भयभीत होने लगी। साम्यवाद की मान्यताओं के अनुकूल अपनी जीवन दृष्टि बनाकर प्रगतिवाद को अपनानेवाले रचनाकारों में नागार्जुन जी अग्रणी हैं। उनके व्यवस्था और शोषकों के खिलाफ विद्रोह के स्वर और आम आदमी के प्रति सहानुभूति दिखाई देती है। जब-जब उन्हें कुछ गलत होने की संभावना दिखाई दी तब-तब उन्होंने उसका प्रखर शब्दों में विरोध किया। जनता का दुख स्वयं उनका दुख बन जाता है। वे हर समय आम इंसान के साथ खड़े दिखाई देते हैं। इसलिए नागार्जुन जी लिखते हैं-

“ नई-नई सृष्टि रचने को तत्पर
कोटि-कोटि कर चरण
देते रहे अहरह स्निग्ध इंगित

और मैं अलस-अकर्मा, पड़ा रहूँ चुपचाप।”⁸

इस प्रकार नागार्जुन जी ने जीवन के दुख को निराशा में बदलने नहीं दिया, बल्कि संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। अपनी अनुभूति के माध्यम से बहुत सारे छोटों लोगों के दुखों को उन्होंने समझाया। उनका दुख व्यापक दुख बन गया।

नागार्जुन जी ने धर्म की आड़ में पनप रहे अत्याचार को खुले शब्दों में विरोध किया। समकालीन धर्म समाज के लिए कोई दिशा दर्शक न बनकर जिंदगी में तबाही और पलायन को उत्तेजित कर रहा था। हमारा देश अनेक जातियों और धर्मों में बटा है। जिसका फ़ायदा हमारे राजनीतिक लोग और पूँजीपति वर्ग उठा रहा था। वैसे देखा जाए तो आज भी कुछ बदलाव नहीं हुआ है। हिंदी साहित्य में नागार्जुन एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने सामाजिक यथार्थ, वर्ग-संघर्ष, शोषण, राजनैतिक विडंबनाओं और धार्मिक पाखंड के विरुद्ध अपनी लेखनी को धार दी। उन्होंने धार्मिक व्यवस्था की खोखली परंपराओं और ढकोसलों पर भी तीखा प्रहार किया। नागार्जुन की कविताएँ धार्मिकता की आड़ में होने वाले सामाजिक अन्याय, अंधविश्वास और सामंती सोच को चुनौती देती हैं।

अपने ही बनाए गए गलत रूढ़ी-परंपराओं में भारतीय जनमानस आकुल है। कवि लिखते हैं –

“श्रद्धा का तिकड़म से नाता,
जय हे भिक्षुक, जय ही दाता।
पियो संत हुगली का पानी
पैसा सच है, दुनिया फानी।”⁹

नागार्जुन की उपर्युक्त पंक्तियों में श्रद्धा के नामपर होनेवाले धार्मिकता के बाजार पर व्यंग्य के ताने कसे हैं। धर्म के ठेकेदारों के लिए त्याग और साधना मूल्यहीन है। धर्म के माध्यम से पैसा कमाना और जनता को लूटना उनका अंतिम उद्देश्य है।

निष्कर्ष:

नागार्जुन का काव्य न केवल सौंदर्यबोध और कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि वह जनसंघर्ष, सामाजिक विषमता और वर्ग-संघर्ष के यथार्थ चित्रण का प्रखर औजार भी है। उन्होंने शोषित, वंचित, दलित, किसान, मजदूर, स्त्री और आम जनता की पीड़ाओं को सजीवता के साथ शब्दों में ढाला। नागार्जुन ने अपने काव्य के माध्यम से पूँजीवाद, सामंतवाद, धार्मिक पाखंड और राजनीतिक विडंबनाओं की मुखर आलोचना की तथा समाज में परिवर्तन की तीव्र आकांक्षा को स्वर दिया। उनकी कविताओं में वर्ग चेतना, विद्रोह, सहानुभूति और आशा का अद्वितीय संगम मिलता है। उन्होंने न केवल शब्दों के माध्यम से बल्कि अपने जीवन के संघर्षों से भी जनता के पक्ष में खड़े होकर साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का हथियार बनाया। वे यथार्थ के कवि थे जिन्होंने लोकजीवन को उसकी सम्पूर्ण जटिलता और पीड़ा के साथ प्रस्तुत किया। नागार्जुन का काव्य हिंदी साहित्य में वर्ग-संघर्ष के प्रभावी चित्रण का सशक्त उदाहरण है, जिसमें उन्होंने केवल समाज की विसंगतियों का चित्रण नहीं किया, बल्कि व्यवस्था के खिलाफ जन-जागरण और संघर्ष की चेतना को भी प्रखर किया। उनका साहित्य आज भी सामाजिक बदलाव के लिए प्रेरणा देता है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. डॉ. शांति विश्वनाथ-नागार्जुन की काव्य चेतना, पत्रिका अक्षर शिल्पी, अंक अक्टूबर-दिसंबर, 2011, पृष्ठ 32
2. नागार्जुन -हज़ार-हज़ार बाँहों वाली, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981, पृष्ठ 44
3. नागार्जुन – इस गुब्बारे की छाया में, रामराज्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 62
4. डॉ. अनिल कुमार- प्रगतिशील चेतना और नागार्जुन का काव्य दी प्रमोद ट्रेडिंग कॉरपोरेशन, वाराणसी 2005, पृष्ठ 33

5. सं.शोभाकांत मिश्रा- नागार्जुन रचानावली खंड
1,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,2003, पृष्ठ 226
6. नागार्जुन -हज़ार -हज़ार बाँहों वाली,राधाकृष्ण
प्रकाशन,नई दिल्ली,1981, पृष्ठ 168
7. नागार्जुन -सतरंगे पंखोवाली- वाणी प्रकाशन,नई
दिल्ली,2001, पृष्ठ 32
8. वही, पृष्ठ 14
9. नागार्जुन – प्यासी पथराई आँखे,यात्री
प्रकाशन,इलाहाबाद, 1962,पृष्ठ 32

